संगीत के अनूठे सुर

ऑपेरा गायिका क्रिस्टीन मटोविच

गिरिराज अग्रवाल

फोटो: हेमंत भट्टनागर

ऊपर: अमेरिकी ऑपेरा गायिका क्रिस्टीन मटोविच गैरसरकारी संगठन रितिंजलि द्वारा संचालित स्कूल के बच्चों के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।

नीचे: बालिका कृष्णा के साथ अपनी मुस्कराहट बांटती क्रिस्टीन मटोविच।

किसी नए परिवेश में आपकी भाषा न समझने वाले बच्चों से संवाद स्थापित करना मुश्किल होता है लेकिन अमेरिकी ऑपेरा गायिका क्रिस्टीन मटोविच ने संगीत के सुरों में इसका समाधान खोजा है। वह पिछले एक साल से भारत में हैं और उन्होंने सुरों के जरिये न केवल यहां के बच्चों से रिश्ता कायम किया है बल्कि अपने कार्यक्रमों से अमेरिका और भारत के गीत-संगीत की साझा डोर को भी मजबूती देने का प्रयास किया है। यही नहीं, कमजोर वर्गों के बच्चों के कल्याण के लिए उन्होंने धन जुटाने की मुहिम में भी शिरकत की है।

सितंबर के शुरू में उन्होंने ऐसे ही एक प्रयास में गैरसरकारी संगठन रितिंजिलि के दिल्ली के कुसुमपुर पहाड़ी इलाके में स्थित स्कूल में पढ़ रहे गरीब बच्चों के लिए धन जुटाया। इसके लिए कनॉट प्लेस के क्यूबीए रेस्तरां में उन्होंने बच्चों के साथ कार्यक्रम पेश किया और एकल प्रस्तुति भी दी। वह पुचिनी के अलावा जैज और ब्रॉडवे में भी सिद्धहस्त हैं। इससे पहले वह गैरसरकारी संगठन कैन किड्स के लिए भी धन जुटाने का काम कर चुकी हैं।

कैलिफोर्निया में जन्मी सुश्री मटोविच का बच्चों से जुड़ाव लंबे समय से है। उन्होंने भारत आने से पहले न्यूयॉर्क, सैन फ्रांसिस्को और न्यू मेक्सिको में भी पब्लिक स्कूलों में बच्चों के साथ संगीत के कार्यक्रम किए। वह कहती हैं, ''हर जगह मेरी कोशिश यही रही कि उन चीजों को छुआ जाए जो साझा हैं। बच्चों की पृष्ठभूमि और उनके दिमागी स्तर के अनुरूप उनसे नाता जोड़ा जाए।'' मुंबई के माहिम इलाके में मिमी बोट्टीवाला द्वारा चलाए जा रहे अनाथालय के अनुभव के बारे में वह बताती हैं, ''मैंने बच्चों को मौसम और कला के जरिये संगीत सिखाने का प्रयास किया। उनसे पूछा कि हवा के बहाव, हल्की वर्षा, तेज वर्षा और तूफान की आवाजें कैसी होती हैं।'' उन्होंने इसी तरह बच्चों से सूरज निकलने और मोर के नाचने के बारे में पूछा। इन अलग-अलग आवाजों और दृश्यों का इस्तेमाल उन्होंने बच्चों को संगीत सिखाने में किया।

दिल्ली में रितिंजली स्कूल के साथ अपने अनुभव के बारे में वह कहती हैं, ''बच्चों को संगीत का ज्यादा ज्ञान नहीं था। लेकिन उनका लगाव कम नहीं था।'' वह कहती हैं, ''यहां मुझे एक चीज ने विशेष रूप से छुआ। इलाके में दोपहर में पानी के टैंकर आते तो लोग पानी के लिए झगड़ रहे होते थे जिनमें इन बच्चों के माता-पिता भी थे। इसके बावजूद बच्चों में सीखने की ललक थी और उनके चेहरे पर मुस्कान। ऐसे बच्चों की कुछ मदद कर पाने से संतोष मिलता है।''

सुश्री मटोविच को संगीत से लगाव कब हुआ? वह कहती हैं, मेरे माता-पिता, बहिन सभी की संगीत में दिलचस्पी थीं। मेरे पिता ओबो और पियानो बजाते थे और मां टिंपानी। मां गायक भी थीं। मैंने बचपन में पियानो बजाना शुरू किया और 13 साल की उम्र में ऑपेरा करने लगी। अब यह जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुका है। जब दूसरे बच्चे गणित और विज्ञान में बढ़िया प्रदर्शन कर रहे होते थे तो हम संगीत में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे थे। लेकिन यह अलग करिअर था, अमीर बनने का नहीं।'' संगीत को लेकर अमेरिका और भारत की तुलना पर वह कहती हैं, ''पश्चिमी क्लासिकल संगीत में 6-8 तरह की अलग-अलग शैलियां हैं। भारत में भी अलग-अलग राग हैं। संतूर है, तबला है। पूर्व का अपना संगीत इतिहास है। दोनों बीच में कहीं मिलते हैं।'' सुश्री मटोविच को संगीत के क्षेत्र में मार्केटिंग और कानूनी अनुबंध के लिए भी जाना जाता है। उन्होंने सिटी बैंक और गोल्डमैनसैक्स के साथ काम करने के दिनों में इसका अनुभव हासिल किया। वैसे उन्होंने संगीत से जुड़े सभी पहलुओं से जुड़े विस्तृत कानूनी पाठ्यक्रम की पढ़ाई की है।

उन्होंने अब भारत को अपना घर बना लिया है। उन्होंने मई 2006 में लेखक-पत्रकार अवतार सिंह के साथ शादी की। वह कहती हैं, ''मुझे भारत से प्यार है। मेरे पति का बड़ा पंजाबी सिख परिवार है और मेरे सास-ससुर अच्छे हैं।'' अवतार से उनकी मुलाकात जून 2003 में न्यूयॉर्क में हुई जहां अवतार की बहिन की शादी उनकी एक दोस्त के साथ हो रही थी। उसके बाद मुलाकातों का सिलसिला चलता रहा।

दिल्ली आने पर उन्हें कैसा लगता है? वह कहती हैं, ''अमेरिका में आप पूर्वी तट से पश्चिमी तट की तरफ जाएं तो आपको वही भाषा सुनने को मिलती है। जबकि भारत में एक छोर से दूसरे छोर जाने पर बहुत-सी संस्कृतियों से रूबरू होते हैं।'' तो क्या उन्हें अमेरिका की याद नहीं आती? वह कहती हैं, ''मुझे न्यूयॉर्क याद आता है। वहां पैदल घूमना, वहां के सबवे, लिंकन सेंटर, नाइटलाइफ और सांस्कृतिक पहुंच। वहां मुझे हर शाम पांच अलग-अलग चीजें करने के लिए निमंत्रण मिलते थे।''

भारत में वह अब तक अमेरिकी दूतावास के संगीत जन संपर्क कार्यक्रमों के अलावा नीमराणा फाउंडेशन और मनीष अरोड़ा के फैशन शो के लिए भी अपने कार्यक्रम पेश कर चुकी हैं। कानपुर में अमेरिकी दूतावास के एक जन संपर्क कार्यक्रम में उन्होंने पश्चिमी और पूर्वी संगीत में मौजूद समानताओं का खाका खींचा।

सुश्री मटोविच बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। वह कई भाषाओं की जानकार हैं। अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच और इटालियन में धारा प्रवाह हैं। जर्मन और स्पेनिश में भी बातचीत कर सकती हैं। और खास बात यह है कि अब हिंदी भी सीख रही हैं।

अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में वह कहती हैं कि भारत में संगीत और ऑपेरा को लोगों से संपर्क का जरिया बनाना जारी रखेंगीं। वह कहती हैं, ''हमारी उम्मीदें, विश्वास और आनंद साझा हैं।'' □